ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.53
IJHA 2025; 7(2): 576-579
www.humanitiesjournals.net
Received: 15-10-2025
Accepted: 18-11-2025

अभिजीत कुमार सिंह
शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अभिजीत कुमार सिंह
शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

मृणाल पांडे का उपन्यास "रास्तों पर भटकते हुए": एक समीक्षा

अभिजीत कुमार सिंह

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26647699.2025.v7.i2g.261

सारांश
आज महानगरीय जीवन मूल्यहीनता का जड बनता जा रहा है। यहां न किसी को किसी के भावनाओं की कदर है और न भावनाओं का एहसास है। बस आलिशान जीवन जीने के लिए इन्सान पैसों के पीछे भाग रहा है। गांव में रहनेवाला व्यक्ति भी यहां आकर अपनी संस्कृति भूल जाता है। एक तो आर्थिक विषमता के कारण महानगर अमीरी और गरीबी के बीच बटकर रह गया है। जिसके चलते महानगर में अमीरों की जीवनशैली और गरीबों की जीवन शैली में काफी अन्तर आ गया है। परंतु मृणाल पांडे जी ने अपने उपन्यासों विशेषत गरीबी से अमीर बने व्यक्ति के मूल्यों में किसतरह बदलाव होता है इसपर प्रकाश डाला है और महानगरीय जीवन में बढती मूल्यहीनता पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। गांव से आया व्यक्ति महानगर में आने के बाद जब बडा बन जाता है तब उसे अपने रिश्ते पिछडे लगने लगते द्य केवल रिश्ते ही नहीं तो अपनी मातृभाषा भी उसे पिछडी लगती है। कारण वह पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंग जाता है। महानगरीय जीवन में बढती इस मूल्यहीनता पर मृणाल पांडे जी ने 'रास्तों पर भटकते हुए इस उपन्यास में यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

कुटशब्दः मूल्यहीनता, संस्कृति, जीवनशैली, आर्थिक विषमता

प्रस्तावना
मृणाल पांडे का उपन्यास "रास्तों पर भटकते हुए" महानगरीय जीवन में बढ़ते मूल्यों के पतन और समाज के बदलते स्वरूप पर एक यथार्थवादी चित्रण है। उपन्यास की नायिका मंजरी गाँवों का महानगरों में विलय होते देखकर और पत्रकारिता के राजनीति और उद्योग में बदलते स्वरूप को देखकर सच्चाई की तलाश करती है। वह जीवन, समाज और अपने आस–पास हो रहे परिवर्तनों के कारणों को समझने के लिए भटकती है और इस दौरान उसे कई व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जिस वक्त गाँवों का महानगरों में, पत्रकारिता का राजनीति में और राजनीति का उद्योग–उपक्रमों में विलय हो रहा होय रास्तों पर भटकते हुए कार्य–कारणय सही–गलत की खोज करना तो दुनियादारी नहीं ! मगर उपन्यास की नायिका मंजरी यही करती है। उसमें एक छटपटाहट है जानने की, कि जो होता रहा है वह क्यों होता रहा है? इस दौरान वह बार–बार लहूलुहान होती है। घर–परिवार सहकर्मी सबसे विच्छिन्न होकर भाषा की, शब्दों की आदिम खोह में छिपने की कोशिश करती है, कुछ हद तक सफल भी होती है । पर तभी बंटी उसके जीवन में प्रवेश करता है, और उसके भीतर का हिमवारिधि पिघलने लगता है। किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की रहस्यमयी रखैल का यह मासूम गर्वीला बच्चा, ऊँगली पकड़कर मंजरी को अपने साथ उन रास्तों पर भटकता है, जहाँ पैर रखने से वह कतराती रही है। पहले बंटी, और उसके बाद उसकी माँ की नृशंस हत्या, और राजधानी के सुरक्षातंत्र की रहस्यमय चुप्पी मंजरी को इन हत्यारों की तह में जाने को बाध्य करती है । बंटी की स्मृति के सहारे तब मंजरी एक स्याह पाताली गंगा के दर्शन करती है, जोदेश के मर्म, उसकी राजधानी के तलघर में कई रहस्यमय भेदों को छुपाए बह रही है । चाहे न चाहे मंजरी के अपने जीवन के कई स्रोत भी इससे जुड़े हुए निकलते हैं । दो मौतों की तफ्तीश के बहाने मंजरी अपने निजी जीवन, विवेक एंव अपनी अंतरात्मा की श्परिक्रमा करते हुए रास्तों पर भटकती है ।.

समीक्षा के मुख्य बिंदु
महानगरीय मूल्यों का पतन
उपन्यास आधुनिक महानगरीय जीवन में बढ़ते अर्थ–आधारित वर्ग–संरचना और धन को नैतिकता से ऊपर रखने की प्रवृत्ति को उजागर करता है।

बदलते सामाजिक परिदृश्य

यह उपन्यास गाँवों के महानगरों में रूपांतरण और इस प्रक्रिया में पारंपरिक मूल्यों के क्षरण को दर्शाता है।

नायिका का संघर्ष

मंजरी घटनाओं के कारणों को समझने और सही–गलत के बीच के अंतर को जानने के लिए एक व्यक्तिगत यात्रा पर निकलती है, जिसमें उसे कई बार लहूलुहान होना पड़ता है।

सामाजिक यथार्थ का चित्रण

मृणाल पांडे जी ने अपने उपन्यास में महानगरीय जन–जीवन की विभिन्न समस्याओं का यथार्थ रूप से चित्रण किया है, जिससे पाठक समाज की वास्तविकता से रूबरू होते हैं।

संवेदनशीलता और जागरूकता

एक संवेदनशील लेखिका के रूप में, पांडे घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन पूरी तरह आत्मसात करती हैं, जो उनके उपन्यासों को श्रेष्ठ कोटि में रखती हैं।

कुल मिलाकर, यह उपन्यास आधुनिक समाज की जटिलताओं, महानगरीय जीवन की चुनौतियों और मनुष्य के भीतर हो रहे आंतरिक संघर्षों का एक गहरा अध्ययन है।

उपन्यास के कुछ अंश

जिस वक्त गावों को महानगरों में, पत्रकारिता का राजनीति में और राजनीति का उद्योग–उपक्रमों में विलय हो रहा होः रास्तों पर भटकते हुए कार्य–कारण सही–गलत की खोज करना तो दुनियादारी नहीं। मगर उपन्यास की नायिका मंजरी यही करती है। उसमें एक छटपटाहट है जानने की, कि जो होता रहा है वह क्यों होता रहा है ? इस दौरान वह बार–बार लहूलुहान होती है। सहकर्मी सबसे विछिन्न होकर भाषा की, शब्दों की आदिम खोह में छिपने की कोशिश करती है, कुछ हद तक सफल भी होती है, पर तभी बंटी उसके जीवन में प्रवेश करता है, और उसके भीतर का हिमवारिधि पिघलने लगता है। किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की रहस्यमयी रखैल का यह मासूम–गर्वीला बच्चा, ऊँगली पकड़कर मंजरी को अपने साथ उन रास्तों पर भटकता है, जहाँ पैर रखने से वह कतराती रही है। पहले बंटी, और उसके बाद उसकी माँ की नृशंस हत्या, और राजधानी के सुरक्षातंत्र की रहस्यमय चुप्पी मंजरी को इन हत्याओं की तह में जाने को बाध्य करती है। बंटी की स्मृति के सहारे तब मंजरी एक स्याह लइववोध्ळताला गंगा के दर्शन करती है, जो देश के मर्म, उसकी राजधानी के तलघर में कई रहस्यमय भेदों को छुपाए बह रही है। चाहे न चाहे मंजरी के अपने जीवन के कई स्त्रोत भी इससे जुड़े हुए निकलते हैं। दो मौतों की तफतीश के बहाने मंजरी अपने निजी विवेक एवं अपनी अन्तरात्मा की परिक्रमा करते हुए रास्तों पर भटकती है।

कथा में आंचलिकता

मृणाल पाण्डे के उपन्यास रास्तों पर भटकते हुए की कथा में आंचलिकता की छटा सर्वत्र विद्वान है। समय के साथ होते बदलाव को दर्षाता हुआ यह गंद्याष दृश्टत्य है – "सौभाग्यवती गारटड को स्वीकृत करने का प्रस्ताव और छेकां गया तो इकलौता बेटा भी हाथ से जाता रहेगा। बेटे और बहू में से चुनने में वक्त ही कितना लगता है ? पर झूठा क्यों कहूं । विच्छेद की इस छड़ी में डॉक्टर साहब यानी मेरे वसुर ने यह स्पश्ट कर दिया था कि पैसे से जितनी खुषी खरीदी जा सकती है, उसे थमाकर एवज में वे मेरी खोई सदभावना वापस पाना चाहते हैं । आजादी के बाद भी लोग गुलाम थे। "संकटो से भरा हुआ साल था वह छह माह में आम चुनाव होने थे । चालीस के आन्दोलन के कई युवा दिलों की उद्दाम धडकने अब तक खा–खाकर कोलेस्टेरोल की कीचड़ से बूढ़ी षिराओं और थकी हुई पेषियों की गुलाम बन चली थीं।

यह उपन्यास मनोवैज्ञानिक दृश्टि से औरतों की षोचनीय स्थिति तथा उनके प्रति अपने विचारों और दृश्टिकोण को दर्षाता है।

औरतों के लिए घर के सामान की फिक्र में उम्र काटना उनकी एक अनिवार्य नियति बन जाता है। मेरे पति की मां हो या भाई की बीवी, उनकी सुबह नौकरों पर झल्लाते हुए षुरू होती थी । वे खुद से सोती और दिन चढ़े उठती थी जब तक घर के कमाऊ मर्द काम पर जा चुके होते फिर देर तक वे बेषकीमती, लेकिन झल्लम–झल्ले किस्म के गाउन लपेटे एक विराट झालदार नाव की तरह मंजिल दर मंजिल तिरती घर की नाजुक चीज बरत के कोने अंतरों की साफ सफाई करती करातीं।

मृणाल पाण्डे के उपन्यास की विशिष्टता

मृणाल पाण्डे जी भी उन्हीं साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने ऐसे समय में लेखन कार्य आरम्भ किया है जब समाज में चारों ओर विषाद और विपाता व्याप्त है। मृणाल जी का व्यक्तित्व सौम्य व गरिमापूर्ण रहा है। वे मात्रा परम्परावादी नहीं है, अपितु वैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण से ओत–प्रोत हैं। मृणाल जी में सरलता, ईमानदारी, स्वाभिमानी आदि गुणों की झलक प्रथम दृष्टि में ही मिलती है। उनमें देश प्रेम, समाज सुधार का भाव व समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति आक्रोश स्पष्ट दिखाई देता है।

26 पफरवरी 1946 को मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में जन्मी मृणाल जी ने व्यवसाय के क्षेत्रा में अनेक स्तरों पर संघर्ष का सामना किया और इन संघर्षों पर विजय पताका पफहराती हुई हमेशा आगे बढ़ी। उन्होंने पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रा में पुरुषों के साथ खड़े होकर भावी महिला पीढ़ी के लिए भी आगे बढ़ने व अपने अस्तित्व को स्थापित करने के रास्ते खोल दिए हैं।

प्रत्येक साहित्यकार अपने पूर्व व अपने समकालीन वातावरण से प्रभावित होता है । इसलिए यह जानना अति आवश्यक है कि मृणाल जी से पहले व उनके समकालीन महिला उपन्यासकारों की क्या स्थिति एवं परिस्थितियाँ रही हैं। इसके लिए स्वाधीनता पूर्व महिला उपन्यासकार जैसे ऊषादेवी मित्रा, कंचनलता सब्बरवाल, कमलापुरी, कमलेश सक्सेना, प्रकाशवती आदि व स्वतंत्रयोत्तर महिला उपन्यासकार जैसे शिवानी जी, कृष्णा सोबती, रजनी पनिकर, मनु भण्डारी, ऊषा प्रियम्वदा, मालती जोशी, राजी सेठ आदि का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

मनुष्य समाज की सबसे छोटी ईकाई है। समाज विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है–मानवीय चेतना। मानव की चेतना उसे केवल उसके परिवेश को समझने की ही शक्ति प्रदान नहीं करती बल्कि अतीत व भविष्य के बीच मूल्यांकन करने की क्षमता भी प्रदान करती है। समाज में जब कोई नई विचारधारा किसी लक्ष्य को लेकर आती है तो समाज में उसके कारण जागृति आती है तो उसे ही सामाजिक चेतना कहते हैं ।

सामाजिक चेतना समाज के शुभ–अशुभ, सत्य–असत्य तथा तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को जानने की शक्ति है। यह सत्य है कि सामाजिक चेतना के अभाव में साहित्य समाज का उचित दिशा–निर्देशन नहीं कर सकता। यदि साहित्य चेतना के अभाव में निष्प्राण है तो सामाजिक चेतना के बिना, दृष्टिहीन, जो न तो वर्तमान के विषय में ही कह सकता है और न ही भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

मृणाल जी के उपन्यास साहित्य में सामाजिक चेतना के प्रत्येक पक्ष को समाहित किया गया है। जीवन के सभी पक्षों का सजीव चित्राण जितना उपन्यास कर सकता है उतना साहित्य की कोई अन्य विधा नहीं कर सकती।

समाज परिवार से बनता है। मुख्यतः भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार–प्रणाली रही है। आज निजी स्वार्थों की पूर्ति व आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होने के कारण संयुक्त परिवार बड़ी शीघ्रता से टूट रहे हैं और एकल परिवारों में

परिवर्तित होते जा रहे हैं। परिवार विवाह से बनता है। सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक विकास के लिए विवाह एक अत्यन्त पवित्रा कार्य है, जो न केवल दैहिक है बल्कि आत्मिक है, निःस्वार्थ तथा निश्छल है। वर्तमान में विवाह का स्वरूप बदल रहा है। आजकल अधिकांशतः अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम विवाह तथा अदालती विवाह भी देखने को मिलते हैं। अन्तर्देशीय विवाह का प्रचलन भी बढ़ रहा है।

पति को परमेश्वर मानने वाली नारी आज समानता का दावा करती है। वर्तमान समाज में नारी विविध रूपों में मौजूद है। आज भी समाज में ऐसी नारी है जो केवल अपने कर्त्तव्य को जानती है और अपने अधिकारों के बारे में उसे अहसास तक नहीं है। जिसके कारण वह पूर्ण शोषिता है। दूसरी ऐसी है जो अपने अधिकार भी जानती है और कर्त्तव्य भी। दोनों में सामंजस्य रखते हुए जीवन जीती है वह पारम्परिक है। तीसरी वह है जो केवल अपने अधिकारों को पहचानती और समाज की व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए विद्रोह करती है। उसकी इस मानसिकता के पीछे सम्पूर्ण समाज–व्यवस्था जिम्मेदार है। वर्तमान में व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए आवश्यक तत्त्व शिक्षा का स्वरूप भी बदल रहा है। उस पर भी पाश्चात्य प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति अपना अस्तित्व खो रही है। यही कारण है कि हमारा समाज दिन प्रति दिन विभि समस्याओं का समाधान करने की अपेक्षा उनमें घिरता जा रहा है। युवा वर्ग चाहकर भी 'जाति भेद' को पूरी तरह से मिटा नहीं पा रहा है। वर्तमान में लिंग भेद समाज की बड़ी समस्या बना हुआ है। 21वीं सदी में पहुंचने के बाद भी । समाज बेटियों को प्यार व संस्कार तो देना चाहता है अधिकार नहीं। आज भी बेटे की ही कामना की जाती है। दहेज रूपी रावण भी अपनी शक्ति को दिनोंदिन बढ़ाता ही जा रही है। अनमेल विवाह, बहु विवाह व बाल विवाह जैसी समस्या आज भी समाज के विकास में बाधक बनी हुई हैं। श्बेरोजगारीश व श्शराबश आदि भी युवा पीढ़ी को भटकाव की स्थिति में ले जा रहे हैं।

हमारे नैतिक मूल्य भी वर्तमान में पाश्चात्य प्रभाव के कारण ढीले पड़ते जा रहे हैं। एकल परिवारों के कारण बुजुर्गों को एकाकी जीवन जीना पड़ रहा है। नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी में विचारों के मतभेद के कारण मानसिक द्वन्द्व की स्थिति पैदा हो रही है ।

हमारे समाज की वर्तमान स्थिति के लिए यहाँ की राजनीतिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। लम्बे समय तक निरंकुश राजतंत्रा की मनमानी, उसके बाद विभिन्न बाहरी आक्रमण व बाहरी लोगों का शोषण व अत्याचार पूर्ण शासन को सहन करने के बाद जब देश में जनतंत्रा की स्थापना हुई तो लोगों को कुछ बदलाव की उम्मीद थी, किन्तु हुआ इसके विपरीत। वर्तमान में राजनीतिज्ञ कुशल राजनेता का मुखौटा लगाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। जनता यह जानती है कि उनके निर्वाचन के समय दिए गए भाषण भी झूठे हैं और आश्वासन भी। परन्तु जनता के पास स्थिति में बदलाव लाने का दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। ये अपने लाभ के लिए समाज में विभिन्न प्रकार के साम्प्रदायिक दंगे करवाते हैं और समाज कल्याण के लिए आया पैसा अपने स्वार्थों की पूर्ति पर खर्च करते हैं।

वर्तमान आर्थिक परिदृश्य ने मनुष्य के जीवन को बदल दिया है, जिसका सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। अर्थ की शन कमी के कारण पारिवारिक रिश्तों में तनाव आ गया है। नई पहले आपसी सम्बन्धों का निर्धारण नैतिक मूल्यों के आधार पर होता था परन्तु आज हर संबंध केवल अर्थ पर इवेट आधारित है। भारतीय समाज का बड़ा हिस्सा आज भी कृषि पर आधारित आजीविका पर निर्भर है। इसके अलावा धनार्जन के अन्य साधन भी लोगों ने अपनाए हैं। अर्थ की समस्या के कारण ही युवाओं का लगातार विदेशों की ओर पलायन बढ़ रहा है।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति में 'धर्म' का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। धर्म व्यक्ति को समाज में समाज के नियमों के साथ जीना सिखाता है। भारतीय समाज पूर्णतयः धार्मिक आस्था पर टिका हुआ समाज है। उसमें विभिन्न देवी–देवताओं और ईष्ट देवों की पूजा का विधान है। गरीबी, अज्ञानता के कारण समाज में तन्त्रा – मंत्रा व टोटके भी प्रचलित है और आधुनिक समय में भी समाज विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों के साथ जीता है। ईश्वर में अटूट विश्वास व श्रा के कारण ही आज भी वह मन्नत, मनौतियों पर विश्वास करता है और कामना पूरी होने पर भगवान के सामने मांगी मनौती पूरी भी करता है।

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति व सभ्यता होती है। भारतीय संस्कृति की भी अपनी अलग पहचान है उसमें प्रचलित विभिन्न रीति–रिवाज व परम्पराएँ विशेष हैं। भारतीय समाज में शादी, सगाई, नामकरण, मुंडन, श्रा (आदि की विभिन्न रीति व परम्पराएँ प्रचलित हैं। लोकगीत व त्यौहारों की भी अपनी विशेषता है। किन्तु वर्तमान समय बदल रहा है। सारी सामाजिक व्यवस्था धन पर आधारित होती जा रही है। स्वर्ग की प्राप्ति तक के लिए मृत्यु समय में दान देने की परम्परा है जबकि वह व्यक्ति दिन भर का भोजन तक भी न जुटा पाने में असमर्थ होता है तो भी उसके लिए कुछ क्रियाएँ निश्चित हैं। एक तरपफ तो व्यक्ति इन परम्पराओं में पूरी तरह डूबा हुआ है। दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृ ति के प्रभाव के कारण आज का युवा वर्ग इन संस्कारों को ढकोसला मानता है और परिवारिक रिश्तों के साथ भी खिलवाड़ करता है। वहीं विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इस प्रकार मृणाल जी के उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व का यथार्थ चित्राण सांस्कृतिक मूल्यों के उत्थान व पतन किया गया है।

मृणाल जी की शिल्प – संरचना भी सामाजिक चेतना को ही अभिव्यक्त करती नजर आती है। उन्होंने शिल्प–संरचना में पूरा ध्यान रखा है कि वह लोक जन–जीवन से ऊपर का साहित्य न बन जाए। वे सदैव की समाज से जुड़कर चलती नजर आई है। उन्होंने लोक कथात्मक भाषा का प्रयोग किया है और उनके प्रतीक व बिम्ब भी सामाजिक चेतना से अछूते नहीं हैं। उनकी भाषा में भी आंचलिक व देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो उनकी भाषा को समाज के अधिक निकट ले आता है। उनके शिल्प के सभी बिन्दुओं पर यदि ध्यान दें तो वे सभी कहीं–न–कहीं समाज से जुड़ी उनकी गहरी चेतना को ही व्यक्त करते नजर आते हैं।

अतः स्पष्ट है कि मृणाल जी का उपन्यास साहित्य पूर्णतय समाज से जुड़ा साहित्य है। उसमें समाज के प्रत्येक पक्ष को उजागर किया गया है। सामाजिक चेतना के सभी आयाम जैसे–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक सभी का यथार्थ चित्राण उनके उपन्यासों में मिलता है। यथार्थ को इतने करीब से जानने में उनकी साहित्यकार रूप में संवेदनशीलता व पत्राकार रूप में समाज के प्रति जागरूकता दोनों का सामंजस्य ही काम आया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि मृणाल पांडे जी की कहानी कला अत्यंत समृद्धएवंसाहित्यिक हैं, उन्होंने अपनी कहानियों के जरिए समकालीन सामाजिक यथार्थ का खुलासा किया है। अधिकांश कहानियों में केंद्र बिंदु नारी ही रही हैं फिर भी समकालीन समाज होने वाली विभिन्न विसंगतियों पर पांडे जी ने अपनी कलम चलाई। पांडे ने हमारे सामने कई मुद्दों को पेश कर उस बात पर सोच विचार करने का तथा सहज एवं जागृत रहने का आह्वान किया है। उनके कहानी संग्रह के आधार पर यह बताया जा सकता है कि परिवारिक जीवन के विभिन्न पक्ष, स्त्री–पुरुष संबंध, परिवार के सदस्यों के आपसी रिश्ते तथा उनके बदलते रूप स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण, स्त्री कों दोयम दर्जे का नागरिक बनाने की प्रवृत्ति, नौकरी पेशा नारी की यातनाएं, मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का खोखलापन, परिस्थितिक

सजगता आदि जैसे विभिन्न पक्षों पर पांडे जी ने अपने कथा साहित्य में प्रकाश डाला है। इनका कथासाहित्य महत्वपूर्णएवं समसामयिक है । मृणाल पांडे जी का स्थान समकालीन साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान रखता है। उनका साहित्य रचना संसार बहुत ही अथाह है। उन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, पत्रकारिता ,आलोचना, खास तौर पर स्त्री विमर्श, यथार्थ बोध एवं नारी की अस्मिता को जगाने का प्रयास किया है।उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है । मृणाल पांडे ने अपने साहित्य जगत में स्त्री–पुरुष के संबंधों को एक नया रूप देने की कोशिश की है उन्होंने आधुनिक जगत में अपनी अस्मिता को तलाशती नारी का चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉक्टर सुशील वर्मा, "आधुनिक समाज की नारी चेतना" आशा प्रकाशन आगरा, 1998.
2. डॉ मीनाक्षी व्यास, "नारी चेतना और सामाजिक विधान" रोशनी प्रकाशन, कानपुर, 2008.
3. डॉक्टर पांडे दर्शन, "नारी अस्मिता की परख" संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
4. डॉ भगवती प्रसाद सिंह, "साहित्य और संस्कृति" कुछ अंतर यात्राएं प्रकाशन संस्थान, दिल्ली 1980.
5. 5.मृणाल पांडे, "परिधि पर स्त्री त्रिभुज के बारे में सोचते हुए पृष्ठसंख्या 35.
6. गोपाल शर्मा, "लोक कथा में जीवन" पृष्ठ संख्या 68.
7. मृणाल पांडे "संपूर्ण नाटक आदिम जो मछुआरा नहीं था" पृष्ठ संख्या 102.
8. दिनेश द्विवेदी,"महिला कथाकारो की कहानिया" पृष्ठ संख्या 10.
9. मृणाल पांडे,"जहां औरतें गढ़ी जाती है" पृष्ठ संख्या 6.
10. पुष्प पाल सिंह, "समकालीन कहानी रचना मुद्रा" पृष्ठ् संख्या 208.
11. हिंदी साहित्य का संदर्भ कोश" पृष्ठ संख्या 301.
12. डॉ महेंद्र कुमार मिश्रा, "हिंदी विश्वकोश" अरिहंत पब्लिकेशन हाउस, जयपुर 2012.